International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; Julu 2017; Page No. 175-177

बौद्ध धर्म व इस्लाम धर्म का समकालीन समाज पर प्रभाव : एक संक्षिप्त अवलोकन

डॉ0 देवेन्द्र प्रताप मिश्र

सी0 एम0 पी0 डिग्री कालेज, इलाहाबाद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

इस्लाम विश्व का एक विशिष्ट धर्म है, अल्लाह ही सृष्टि का कर्ता है। इतिहास में ईश्वरीय दृष्टि से बचकर कोई भी कार्य नही कर सकता है। आकाश के नक्षत्र गण जिस प्रकार पूर्व नियोजित व्यवस्था में प्रिभ्रमण करते है उसी प्रकार न्याय सुसंगत व्यवस्था मनुष्य को उपलब्ध नहीं है किन्तु मनुश्य को सामाजिक संगठन बनाने के लिए कार्य करना पड़ता है मनुष्य सृष्टि का विशिष्टतम् निर्माण है। इस्लामिक अवधारणा के अनुसार इतिहास प्रकाश की ज्योति तथा अंधकार की गहनता के बीच निरन्तर संघर्श है। पर प्रकाश व अंधकार का संघर्ष स्वर्ग और नरक, पुण्य व पाप और फरिस्ता व शैतान के द्वन्द का प्रतीक है ईष्वर अपनी इच्छा से मनुश्य की सृश्टि कर्ता है और मनुष्य का कर्तव्य उसके प्रति पूर्ण आत्म समर्पण करना है।

इस्लामिक समाज विस्वासी मनुष्यों का समूह है, इसमें अतीत के मृत मुसलमान तथा इस्लाम के पहले के पुण्यवान पुरुष भी आते है। ईष्वरीय वाणी तथा कलमा शास्वत अमर तथा अपरिवर्तनीय है। इसी प्रकार से बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध के चार आर्य सत्य (दुःख, दुःख समुदाय, दुःख निरोध, दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा) भी अपरिवर्तनीय है। जिस प्रकार से महात्मा बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति के बाद अलौकिक तथ्य का ज्ञान प्राप्त हुआ उससे तत्कालीन भारत को कर्मकाण्ड व वाह्य आडम्बर तथा कुरीतियों से मुक्ति मिली उसी प्रकार से मुहम्मद साहब को जब ईश्वरी सत्ता का आभास हुआ तो उससे पूरे इतिहास का क्रम चमक उठा। इस्लामिक अवधारणा के अनुसार इस्लामिक समाज निरन्तर प्रगतिशील है।

भारत के बाहर मुस्लिम धर्म का प्रचार इतिहास में लौह और रक्त से लिखा हुआ था, मुसलमान ऑधी और तूफान के समान राजनीतिक दल विजय के साथ धर्म प्रचार में भी संलग्न रहते थे, और अब तक उनको महान सफलताए प्राप्त हुई थी। देश के देश राजनैतिक पराजय के साथ–साथ धार्मिक क्षेत्र में भी आत्मसमर्पण करते जा रहे थे, परन्तु भारत में मुसलमानों का स्वप्न भंग सा हो गया। यहां पर उनका अनुभव पूर्व के अनुभवों से भिन्न प्रकार हुआ। इस महान देश में उनको एक ऐसे धर्म से टक्कर लेनी पड़ी जो शक्ति एवं शक्ति सबल तथा प्रभावशाली था। जिसके सम्मुख आकर मुस्लिम धर्म प्रचार रुक सा गया और उसके अलौकिक प्रसार में रुकावट आयी।

एशिया तथा अफ्रीका के अन्य देशों में जिस विशाल पैमाने पर मुसलमानों ने धर्म परिवर्तन कराये थे और वहां पर जो सफलतांए उनको प्राप्त हुई थी वह सफलतायें उनको भारत न मिल सकी। इस्लाम धर्म अपने निर्दिष्ट नियम–कानून, प्रथाएं, रीति–रिवाज, आचार–विचार, जीवन प्रणाली धार्मिक सिद्धान्त आदि रखता था जिससे उसका किसी भी धर्म के सम्मुख आत्मसमर्पण करना सम्भव न था।

ई0बी0 हैवेल जैसे पाश्चात्य इतिहासकार तथा प्रो0 शर्मा ने इस मत का प्रतिपादन किया कि अपनी राजनैतिक दुर्बलता के होते हुए भी मध्य कालीन भारत की संस्कृति तथा धर्म में इतनी चैतन्यता थी, कि वह उस वृक्ष के समान थे जो शत्रुओं को भी छाया देते है, वे उनकी कोमल शाखाओं को भी नश्ट कर डालें। इस्लाम धर्मावलम्बियों ने भारतीय राजवंशो को पराधीन कर उनकी शक्ति को नष्ट किया, उनके सैनिक संगठन चूर–चूर कर दिया परन्तु हिन्दुओं के बौद्धिक साम्राज्य को नीचा न दिखा सके। उनकी धार्मिक उग्रता हिन्दू धर्म को भयभीत न कर सकी।

इस्लाम धर्म का उदय अरब देश में हुआ, उस समय अरब प्रदेश में अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक विकृतियां थी। यहां के निवासियों के कबीलों की अपनी अलग–अलग धार्मिक मान्यताएं थी। उनमें आपसी झगड़े, दंगे फसाद होते थे, ऐसे समय में अरब प्रान्त के मक्का में 5वीं सदी में हजरत मोहम्मद ने इस्लाम धर्म की स्थापना की। इस्लाम धर्म में धार्मिक कर्मकाण्डों का अभाव था यह लोकहितकारी धर्म था। इस्लाम के प्रवर्तक हजरत मोहम्मद साहब का जन्म अरब देश में जिस यूग में हुआ था वह अत्यन्त पतोन्मुखी का दौर था। एशिया महाद्विप के इस मरुस्थलीय निर्धन देश में अरबों के विभिन्न कबीलों में चारागाह भूमि आदि के स्वामित्व के लिए निरन्तर संघर्ष होते रहते थें।

समुद्रतटीय अरब वासियों का जीवन अपेक्षाकृत अधिक क्रियाशील एवं गतिशील था इनके जीविका का मुख्य साधन व्यापार था तथा इनमें भोगवादी जीवन का बोलबाला था, अरबवासी उन दिनों दुराचार में लिप्त अज्ञानता के अंधकार से ग्रस्त एवं दरिद्रता के प्रकोप से पीड़ित व अन्धकारों से ग्रसित थे। वे भूत–प्रेत में अटूट विश्वास रखते थे ऐसी भीषण प्रतिकूल परिस्थितियों में सातवीं सताब्दी में इस निर्धन देश में जन्में इस्लाम धर्म को प्रारम्भ से ही भीषण विरोध का सामना करना पड़ा।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में धार्मिक आन्दोलन का प्रबलतम रूप हम बौद्ध धर्म की शिक्षाओं तथा सिद्धान्तों में पाते है बौद्ध धर्म की स्थापना महत्मा बुद्ध ने की। ज्ञान की खोज में वे इधर उधर भटकते हुए गया में उरुवेला नामक स्थान पर पीपल वृक्ष के नीचे समाधिस्थ अवस्था में ज्ञान प्राप्त किया। ज्ञान प्राप्त के बाद महत्मा बुद्ध सारनाथ आये और यहां पर अपना प्रथम उपदेश दिये जिन्हें चार आर्य सत्य के नाम से जाना जाता है। यह घटना बौद्ध धर्म में धर्मचक्र प्रवर्तन के नाम से जानी जाती है, बौद्ध धर्म की शिक्षाओं से प्रभावित हो कर सम्राट अशोक व कनिष्क ने इसे राजकीय धर्म बनाया तथा इसके प्रचार प्रसार के लिए बहुत से लोकोपकारी कार्य किए। महापरिनिर्वाण के बाद बुद्ध के अस्थि अवशेषों को आठ भागों में विभाजित किया गया, मगध के शासक अजातशत्रु तथा इस क्षेत्र के गणराज्यों ने स्तूप निर्मित कर इसे सुरक्षित रखा। बौद्ध धर्म के विषय में हमें विशद ज्ञान पालि–त्रपिटक से प्राप्त होता है, महात्मा बुद्ध के अनुसार जीवन में दुःख है, इस दुःख से मुक्ति प्राप्त करने के लिए उन्होंने अश्टांगिक मार्ग का पालन करना बताया।

बौद्ध धर्म में जीवन का परम उद्येश्य यथा– निर्वाण का द्वार स्त्री, पुरुष, युवा, वृद्ध, ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, शूद्र, आर्य, अनार्य, देशी, विदेशी आदि सभी के लिए खुला था। ''जाति मत पूछो'' आचरण

का धम्मघोश समस्त मानव के लिए था। बौद्ध धर्म विश्लेशणात्मक न हो कर जीवन यापन की सरल प्रणाली पर आधारित था जे0एम0 पत्रकार के अनुसार "To the Common man this (Buddhism) was indeed a new gospel there ware no secret mantras no expensire yugyes or Socrifices and deed no difficult doctrines as in the unishads"

महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों को प्रमुखतः दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहला बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धान्त दूसरा बौद्ध धर्म के व्यवहारिक सिद्धान्त। महत्मा बुद्ध ने अपने धार्मिक सिद्धान्तों मे किसी भी दार्शनिक तत्व की विवेचना या प्रतिपादन नहीं किया। तथागत का विस्वास का था कि सृष्टि के निर्वाण तथा आत्मा एवं परमात्मा आदि से मनोत्कर्श का कोई सम्बन्ध नहीं है महात्मा बुद्ध ने कभी यह भी दावा नहीं किया कि वे किसी धर्म का प्रतिपादन कर रहे है। उनका कहना था कि मै पुरातन काल से चले आ रहे धर्म की स्थापना मात्र कर रहा हूँ। यह सब होते हुए भी बौद्ध धर्म के आधार स्वरुप जिन तत्वों का प्रतिपादन किया गया उनमें निहित विचारों द्वारा हमें अनेक दार्शनिक सिद्धान्तों का परिचय मिलता है। यह सर्वमान्य सत्य है कि किसी भी विचार अथवा मत का कोई दार्शनिक आधार अवश्य ही होता है, नैतिकता कर्म प्रधान तथा निर्वाण के तत्व से परिपूर्ण महत्मा बुद्ध के दार्शनिक सिद्धान्तों की प्राप्ति होती है।

श्री बर्नोफ महोदय ने बौद्ध धर्म के इस दार्शनिक सिद्धान्त की चर्चा करते हुए लिखा है कि "Nirvana is nothing but the self lessness in the metaphysical sense of the word relapse in to that being which is nothing in itself"

इनके धर्मिक सिद्धान्तों में परोक्ष रुप से जिस उपरोक्त दार्शनिक सिद्धान्तों की प्राप्ति होती है वे निश्चय ही अति व्यवहारिक एवं विचारणीय है। तथागत ने जो कुछ भी कहा उसका आधार निश्चित ही एक दार्शनिक सिद्धान्त के प्रति आस्था के प्रमाण प्रकट करते है। बौद्ध धर्म जीवित जीवन में विश्वास रखता है अतः अपने प्रत्येक अर्थ में इसका दृष्टिकोण पूर्णतया व्यवहारिक है, महत्मा बुद्ध की मान्यता थी कि ''धर्म जीवन का विषय है मृत्यु का नही'' फलतः उन्होंने जिस धर्म का प्रचार किया उसकें व्यवहारिकता पर विशेष बल दिया गया। बौद्ध धर्म का उदय छठी शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ था उससे इस धर्म ने तत्कालीन समाज में व्याप्त समस्त कुरीतियों की आलोचना की और तर्क पर आधारित धर्म को मानने पर जोर दिया।

इस प्रकार भारत में इस्लामिक इतिहास चेतना का उदय आठवीं सदी के आरम्भ में हुआ। इसे इस्लाम जगत में बौद्धिक पुर्नजागरण का युग माना जाता है। ईरान में अब्बासी वंश के उत्थान ने ऐतिहासिक चेतना को एक नवीन शक्ति प्रदान की इस्लाम के प्रचार की प्रेरणा से प्रभावित हो कर अनेक धर्मावलम्बियों ने यूरोप, अफ्रीका तथा मध्य एशिया में प्रवेश किया। इन धर्मों के ज्ञान ने उनके इतिहास–क्षितिज के विकास में विशेष योगदान दिया। इस्लामिक साम्राज्य का चतुर्दिक विस्तार तथा मक्का की तीर्थयात्रा को सार्वजनिक स्वरुप प्रदान कर इस्लामिक इतिहासकारों ने सर्वप्रथम विश्व भ्रातृत्ववाद तथा विश्व इतिहास की कल्पना जाग्रित की है। तथा हम यह भी देखते है कि धार्मिक कटुता का भाव और विद्वेष भाव को मध्य और आधुनिक युग में अधिक बढ़ावा मिला, जिसका मुख्य कारण धार्मिक केन्द्रों का निजीकरण और सम्प्रदायीकरण है, जिसके मूल में पारस्परिक सौहार्द्र की कमी और विद्वेष भाव रहा है। यह विद्वेष भाव अयोध्या, मथुरा, सारनाथ, संकिसा आदि बौद्ध केन्द्रों में इस समय भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह विद्वेष–मूलक साम्प्रदायिक प्रवृत्ति भारतीय–संस्कृति के सर्वथा विरूद्ध और हानिकर है।

भारत को अपनी पुरा सांस्कृतिक सम्पदा के संरक्षण के लिए इस बढ़ रही द्वेष प्रवृत्ति को रोककर सौहार्द्र प्रवृत्ति को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि ''सभी सम्प्रदायों के लोग सभी जगह मैत्री भाव के साथ रहें और अपने–अपने मंगलकारी सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार करें, क्योंकि सभी शान्ति चाहते हैं।''

भारत की सांस्कृतिक संरचना एवं भारतीय संस्कृति की समृद्धि में बौद्ध धर्म का योगदान नितान्त महत्वपूर्ण है। जहां एक ओर बौद्ध धर्म ने समाज के विभिन्न वर्गों को सामाजिक एकता के सूत्र में आबद्ध करने का प्रयास किया वहीं दूसरी ओर सदियों से उपेक्षित विपन्न एवं अति पिछड़े वर्गों का मार्गदर्शन कर उन्हें जीवन के चरम लक्ष्य निर्वाण की प्राप्ति के लिए भी प्रेरित किया। बौद्ध धर्म ने जीवन मूल्यों के अन्तर्गत जीव हिंसा पर रोक अर्थात अहिंसा के महत्व को प्रतिपादित कर न केवल प्राचीन भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाया अपितु भावी पीढ़ी के लिए एक आदर्श एवं व्यवस्थित जीवन शैली की आधार शिला भी रखा। पशु–पक्षियों के बध को अनुचित बताना, पालतू व जंगली पशुओं के संरक्षण पर बल देना तथा पशु बलि को धर्मिक कृत्य से अलग रखना पर्यावरण संरक्षण की दिशा में निस्संदेह उपयोगी सिद्ध हुए। बौद्ध चिन्तन में वृक्षों की उपादेयता इस तथ्य से प्रमाणित है कि महात्मा बुद्ध को वृक्ष के नीचे ही ज्ञान प्राप्त हुआ था। वस्तुतः बोधि वृक्ष बौद्ध चिन्तन धारा में आस्था के केन्द्र के रूप में अवस्थित है। नारी सशक्तीकरण की दिशा में भी बौद्ध धर्म का अप्रतिम योगदान रहा है। वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में मानवाधिकार की अवधारणा कों सम्प्रति अवश्य बल मिला है, परन्तु बौद्ध धर्म में इसका पूर्व रूप विद्यमान है। दया, करूणा, उदारता, सहानुभूति, वृद्धों की सेवा, बड़ों का आदर, ब्राह्मण–श्रमणों का सम्मान, शील एवं अष्टांगिक मार्ग आदि व्यक्तिगत एवं सामाजिक मूल्यों के प्रतीक हैं। भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार में बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय कला, दर्शन, धर्म आदि युग–युग तक उनकी शिक्षाओं से प्रभावित होते रहे हैं।

बौद्ध धर्म भारत का ही नही अपितु विश्व के मान्य धर्मों में से एक है। बौद्ध धर्म अन्य धर्मों की तरह मात्र एक धर्म नही था, यह एक ऐसे व्यापक आन्दोलन का परिणाम था, जो व्यक्तिगत विश्वासों से लेकर सामाजिक मान्यताओं तक जीवन के अनेक पहलुओं को बदल रहा था और जिसकी स्पष्ट झलक तत्कालीन चिन्तन और जीवन में स्पष्ट थी। इस धर्म ने एक जीवन पद्धति का विकास किया जिसकी नींव मनुष्य के व्यक्तिगत विचार पर पड़ी, इसमें अहिंसा, करूणा, त्याग, और विश्वबन्धुत्व के उदात्त सिद्धान्त थे। बौद्ध धर्म आज भी प्रासंगिक है। बुद्ध का जीवन, कार्य और चिन्तन, पीड़ित मानवता के लिये अतिशय प्रेरक है। विश्व के अनेक देशों में आज भी बौद्ध धर्म एक जीवित धर्म के रूप में दिखाई पड़ता है। चीन, कोरिया, तिब्बत, मंगोलिया, विएतनाम, वर्मा, थाईलैण्ड, कम्पूचिया, जापान, आदि देश आज भी बौद्ध धर्म से अनुप्राणित हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चौबे झारखण्डः इतिहास दर्शन
2. वर्मा दीनानाथः इतिहास दर्शन
3. पाण्डेय विमल चन्द्रः प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, शारदा पब्लिकेशन इलाहाबाद।
4. मुखर्जी राधा कुमुद : प्राचीन भारत
5. श्रीवास्तव कृष्ण चन्द्र : प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, युनाइटेड पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
6. अरणविभंग सुत्त, मज्झिमनिकाय, 3/4/9।
7. धम्मचक्कापबत्तन सुत्त, संयुक्तनिकाय।
8. धम्मपद्, गाथा 273–275।
9. मध्यमभय्–श0 ब्रा 1/1/2/23।
10. ऋग्वेद 2/24/20।

11. अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि। स इद्देवेषु गच्छति। एवं ऋग्वेद 1/1/4।
12. प्लवा ह्योते अदृढ़ा यज्ञरूपा अष्टादशोक्तमवरं येषु कर्म। एतच्छ्रयो येअभिनन्दन्तिमूढ़ा जरामृत्युं ते पुनरेवापि यन्ति। एवं मुण्डकोपनिषद 1/2/7।
13. सुरा मत्स्याः पशोर्मांसं द्विजातीनां बलिस्तथा। धूर्तैः प्रवर्तितं यज्ञे नैतद्वेदेषु विद्यते।– महाभारत 2/5/78।
14. वज्ज च वज्जतो ञत्वा अवज्जं च अवज्जतो। सम्मादिष्ठिसमादाना सत्ता गच्छन्ति सुग्गति। एवं धम्मपद गाथा–319।
15. सीलददस्सन सम्पन्नं धम्मट्ठं सच्चवादिनं। अत्तनो कम्म कुब्बानं तं जनो कुरुते पियं।– वही–217।।
16. हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं सुखम्। तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।
17. यस्तु सर्वाणि भुतानि आत्मनयेवानुपश्यति। सर्व भूतेषु चात्मानं ततो व विजुगुप्सते। ईशावास्योपनिषद–7।
18. मुण्डकोपनिषद्–3/1/6।
19. ऋग्वेद 10/85/1।।
20. तेन त्यक्तेन भु। जीथाः मागृधः कस्य स्विद्धनम्। ईशवास्योपनिषद–1।।
21. नहि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं। अवेरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो। वही–5।
22. वही– 131, 132।
23. संकल्पमूलतः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः। व्रतानि यमधर्माश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः।– मनुस्मृति – 2/3।।
24. नहि वैरेण वैराणि शाम्यन्तीह कदाचन। ओवैरेण च शाम्यन्ति एष धर्मः सनातनः। – महाभारत।
25. अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयं। परोपकारः पुण्याय पापाय परमीडनम्।– वही।।
26. सहमस्समति चे वाचा अनत्थपदसंहिता। एक अत्थपदं संस्यो यं सुत्वा उपसम्पति।– धम्मपद, गाथा–100।।
27. 'वाचा वदामि मधुमत' – अथर्ववेद 1/34/3।
28. धम्मपद, गाथा 7 11।
29. वही – 12।
30. ऋग्वेद 10/37/2।
31. सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रुयात् व ब्रुयात्सत्यमप्रियम्। प्रियं च नानृतं ब्रुयादेष धर्मः सनातनः।
32. धम्मपद, गाथा – 306।
33. न जातु कामः कामानानुपभोगेन शाम्यति। हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते। मनुस्मृति 2/94।
34. नाविरतो दुश्चरितात् नाशान्तो नासमाहितः। नशान्तमनसो वापि प्रज्ञानेनैनमवाप्नुयात्। कठोपनिषद 1/2/24।।
35. हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदास सुरायाम्, ऊर्ध्न नग्ना जरन्ते। ऋग्वेद 8/2/12।
36. ऋग्वेद 10/34।
37. 'वाचः सत्यमशीय' – यजुर्ववेद 39/4।
38. मनुस्मृति 10/88, 89।
39. यच्छेद्वाड्.मनसी प्राज्ञः तद्यच्छेज्ज्ञान आत्मानि। ज्ञानमात्मानि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मानि। कठोपनिषद 1/3/13।।
40. धम्मदपद्, गाधा – 293।
41. सांख्यकारिक – 1।
42. तैत्तिरीय उपनिषद्, शीक्षावल्ली।
43. सावित्रिमात्रसारोअपि वरं विप्रो युयन्त्रिः। नायन्त्रितस्त्रिवेदाअपि सर्वाशी सर्वविक्रयी। मनुस्मृति 2/118।।
44. धम्मपद, गाथा–35।